File No. 23-1132/14 (WRO)

महात्मा कबीर और संत रविदास के काव्य में राष्ट्रीय एकता एंव विद्रोह के स्वरों का तुलनात्मक अध्ययन

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,
नई दिल्ली द्वारा वित्त पोषित

लघु शोध परियोजना

(Minor Research Project)

परियोजना प्रतिवेदन

मुख्य अनुसंधाता

प्रा. डॉ. प्रवीण कांबळे

शोध मार्गदर्शक तथा हिंदी विभाग प्रमुख,

श्री कुमारस्वामी महाविद्यालय, औसा.

जि : लातूर (महाराष्ट्र) 413512

2015 - 2017

विषयानुकृमणिका

अ.क्र.	अध्याय	विवरण	पृष्ठांक
1.	प्रथम अध्याय	हिंदी संत साहित्य की अवधारणा	05
2.	द्वितीय अध्याय	हिंदी संत काव्यधारा की परिस्थितियॉ	27
3.	तृतीय अध्याय	महात्मा कबीर और संत रविदास का जीवनवृत	46
4.	चतुर्थ अध्याय	राष्ट्रीय एकता और विद्रोह के स्वरों का अध्ययन	68
5.	पंचम् अध्याय	दार्शनिक विचारधारा और मानवता	107
6.	षष्ठ अध्याय	उपसंहार	143
	परिशिष्ट	ग्रंथसूची	155

प्रस्तुत 'लघु शोध परियोजना' (MRP) का विषय **'महात्मा कबीर और संत रविदास के काव्य में राष्ट्रीय एकता एवं विद्रोह के स्वरों का तुलनात्मक अध्ययन'** है।

Objectives of the Projects

1. राष्ट्रीय भावात्मक एकता पैदा करना।
2. सामाजिक साम्प्रदायिक एकता एवं सद्भावना की स्थापना करना।
3. नैतिक मूल्यों की स्थापना करना।
4. वर्तमान जीवन के व्यावहारिक समस्याओं का निराकरण करना।
5. सामाजिक विकास के लिए नए तथ्यों की खोज करना।
6. ज्ञानात्मक विकास करना।
7. सामाजिक नियंत्रण एवं प्रगती करना।
8. मानव जीवन में सुधार लाना।
9. सत्य ज्ञान की खोज करना।
10. प्रस्तुत काव्य के विषय तंत्र का उद्घाटन करना।

Achivements From the Projects

उपलब्धियॉ

इस विषय के अध्ययन के पश्चात् शोध कार्य की आवश्यकता को प्रस्तुत करते समय इसकी कुछ उपलब्धियॉ सामने आती हैं। जैसे –

- महात्मा कबीर का और संत रविदास जी का जन्म सामान्य परिवार में हुआ। परंतु उन्होंने अपने विचार और कार्य के माध्यम से असामान्यत्व प्राप्त किया।
- संत कबीरदास बरम संतोषी, उदार, स्वतंत्रचेता, निर्भीक, सत्यवादी, अहिंसा, सत्य और प्रेम के समर्थक, सात्विक, प्रकृति, बाह्य आड़म्बर विरोधी तथा क्रांतिकारी समाज सुधारक थे।
- संत कबीरदास जी जन्मजात विद्रोही थे और उनमें एक अदम्य साहस एवं अखंड आत्मविश्वास था।
- संत कबीरदास प्रखर प्रतिभा तथा विलक्षण अथक सशक्त व्यक्तित्व से संपन्न थे।

- कबीरदास जी के रचनाओं में साखी, सबद, रमैनी, बीजक हैं।
- उनकी 'कबीर ग्रंथावली' एक संकलित काव्य ग्रंथ है। 'गुरु ग्रंथ साहब' में इनके 243 दोहे हैं।
- संत रविदास जी के जीवन को पूर्णतः प्रकाश में लाने के लिए दो प्रमुख साधन का उपयोग किया गया है। जिनमें अंतःसाक्ष्य और बाह्य साक्ष्य है।
- संत रविदास जी के व्यक्तित्व के तत्कालीन परिस्थितियों से ज्ञात होता है कि वे आरंभ में एक आदर्श समाज सुधारक थे।
- तत्पश्चात् कवि, संत, भक्त, उपदेशक आदि रूपों में व्यक्तित्व की स्पष्टता दिखाई देती है।
- संतों के सभी गुण संत रविदास जी के व्यक्तित्व में दिखाई देते हैं। संत रविदास जी के व्यक्तित्व के बारे में कबीरदास जी कहते है – 'संतन में रविदास संत' हैं।
- संत रविदास जी एक महान क्रांतिकारी एवं समाजसुधारक थे।
- उन्होंने समाज के भीतर फैली जाति–पाँति भेदभाव, सामाजिक विशमता, अस्पृष्यता, रूढ़ी–परंपरा का, बाह्य आडम्बर आदि का घोर विरोध किया है। तत्पश्चात् हिंदू–मुस्लिम एकता, राष्ट्रीय ऐक्य का संदेश दिया है।
- भक्तिकालीन संत साहित्य के मौलिक योगदान को रेखांकित किया गया है।
- व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन किया गया है।
- तत्कालीन समस्याओं का अध्ययन कर के मौलिक चिंतन का परिचय दिया गया है।
- दोनों कवि भक्तिकाल के समविचारी कवि हैं।
- तत्कालीन वर्ण–व्यवथा एवं जाति–व्यवस्था, कर्मकाण्ड, रुढ़ि–परंपरा, अंधविश्वास, बाह्य आड़म्बर आदि का विरोध किया है।
- मानव को मानवता और राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया है।
- सामाजिक नैतिकता एवं आध्यात्मिक मूल्यों की स्थापना की है।
- मानव जीवन के बृहत संदर्भ में गहनता से जोड़ने का प्रयत्न किया है।
- इनके काव्य का उद्देश्य सामाजिक और धार्मिक परिवर्तन लाना है।
- इनका काव्य जन–काव्य है।

- शोषित और प्रताड़ित की समस्त प्रवृत्तियों, परिस्थितियों तथा भावनाओं का चित्रण किया है।
- इनका साहित्य अध्यात्मिक अनुभूतियों का लेखा–जोखा मात्र न होकर उसमें तत्कालीन जन–जीवन का प्रतिबिम्ब विद्यमान है।
- दोनों संतों ने तत्कालीन हिंदू तथा मुस्लिम धार्मिक परंपराओं एवं रुढ़िगत मान्यताओं पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया है।
- तत्कालीन परिवेश से प्रभावित होकर जनता को निराकार ब्रह्म, प्रेम, भक्ति, मानवता, समता, बंधुता, स्वातंत्र्यता, एकता, राष्ट्रीयता आदि का उपदेश देकर जनता को जागृत किया।
- कुप्रथाएँ : मध्यकालीन भारतीय सामाज में वर्ण–व्यवस्था, बाल–विवाह, विधवा–विवाह, सती–प्रथा, गुलामी–प्रथा, बहु–स्त्री प्रथा, जाति–प्रथा, सांप्रदायिक कट्टरता आदि कुप्रथाएँ चल रही थीं।
- मध्यकालीन धार्मिक परिस्थिति अत्यंत दुःखद और अत्याचारपूर्ण थी।
- आर्थिक विषमता के कारण मनुष्य–मनुष्य का भक्षण करने को तत्पर हो रहा था।
- इनके जीवनवृत को समझने के लिए अंत–साक्ष्य, बहिर्साक्ष्य तथा अनुमान का आश्रय लिया गया है।
- राष्ट्रीय एकता और विद्रोह के स्वरों का अध्ययन किया गया है।
- उनका मुख्य विद्रोह सामाजिक व्यवस्था के प्रति था।
- 'विद्रोह' का तात्पर्य है तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिवर्तन।
- सांप्रदायिकता, जातिवाद, धर्मांध विश्वास, रुढ़ि–परंपरा एवं कुप्रथाएँ प्रचलित थीं।
- विद्रोहों में साम्य : इनके विद्रोहों में वर्ण–व्यवस्था, बाह्य आड़म्बर तथा सामाजिक रुढ़ियाँ, अवतारवाद तथा बहुदेववाद, मूर्ति–पूजा, वेशभूषा एवं छापा–तिलक, तीर्थ–यात्रा, हिन्दू–मुस्लिम सांप्रदायिकता, अन्धश्रध्दा, हिंसा, असत्य आचारण, छुआ–छूत, साम्प्रदायिक कट्टरता आदि साम्य हैं।
- दार्शनिक विचारधाराओं का साम्य : ब्रह्म की अवधारणा, जीव एवं आत्म दर्शन, माया दर्शन, सांसारिक दर्शन, इष्ट देव का स्वरुप तथा निर्गुण राम की महिमा, एकेश्वरवाद आदि दार्शनिक विचारधाराओं के बिंदु महत्वपूर्ण हैं।

- दर्शन का मुख्य लक्ष्य है मानव का जीवन दुःखमय है।
- समस्याओं का उपाय : एकेश्वरवाद, कर्म को श्रेष्ठता, मंदिर–मस्जिद एक, हिन्दू–मुस्लिम एकता, मानव के दुर्लभ जीवन के प्रति सजगता, लोकतांत्रिक समाजवाद, 'बेगमपुरा शहर' की कामना, समतावादी समाजवादी शासन व्यवस्था की अनिवार्यता, मानव सेवा जैसा धर्म दूसरा कोई नहीं है, मानव प्रेम की अनिवार्यता अर्थात जहाँ मानवता के लिए प्रेम है वही परमात्मा है, श्रम पूँजी एवं श्रम साधना आवश्यक, कर्म की श्रेष्ठता को स्विकारते हुए कर्म करना ही मानवता का धर्म है, पराधीनता एवं परतंत्रता से मुक्त होने प्रेरणा दी हैं।
- मानवतावादी संदेश द्वारा विश्व शांति की प्रेरणा मिलती है।

Summery of the Findings

प्रस्तुत 'लघु शोध परियोजना' (MRP) का विषय 'महात्मा कबीर और संत रविदास के काव्य में राष्ट्रीय एकता एवं विद्रोह के स्वरों का तुलनात्मक अध्ययन' है।

प्रस्तुत शोध कार्य तुलनात्मक पध्दति से की गई है। यह शोध कार्य हिंदी साहित्य के भक्तिकाल से संबंधीत है। भक्तिकाल निर्गुण और सगुण काव्यधारा में विभाजीत है। यहॉ पर निर्गुण कवि महात्मा कबीर और संत रविदास जी के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन किया गया है।

महात्मा कबीर और संत रविदास जी का भक्तिकालीन संत साहित्य में मौलिक योगदान रहा है। उस योगदान को रेखांकित करना ही शोध कार्य का उद्देश्य रहा है। साथ ही तत्कालीन समस्याओं का अध्ययन कर के मौलिक चिंतन का परिचय दिया गया है। शोध विषय को साहित्य, संस्कृति अथवा मानव जीवन के बृहत संदर्भ में गहनता से जोड़ा गया है। अतः उनके चिंतन की क्षमता पर ध्यान दिया गया है। प्रस्तुत दोनों कवि भक्तिकाल के समविचारी कवि हैं। इनके काव्य का मूल उद्देश्य समाज सुधार है। उन्होंने तत्कालीन वर्ण–व्यवथा एवं जाति–व्यवस्था, कर्मकाण्ड, रुढ़ि–परंपरा, अंधविश्वास, बाह्य आड़म्बर आदि का विरोध कर मानव को मानवता और राष्ट्रीय एकता का उपदेश देते हुए सामाजिक नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की स्थापना की है। अतः इस शोध कार्य को निम्न अध्यायों में विभाजीत किया गया है।

प्रथम अध्याय 'हिंदी संत साहित्य की अवधारणा' है। इसमें 'संत' शब्द की व्युत्पत्ति, परिभाषा, संत साहित्य का विभाजन, संत साहित्य की प्रवृतियों आदियों का अध्ययन किया गया है। यह अध्याय काव्य में व्यक्त चेतना को समझने में सहायक रहा है। महात्मा कबीर और संत रविदास जी के वाणीयों के योगदान को रेखांकित करना ही शोध कार्य का उद्देष्य रहा है। साथ ही तत्कालीन समस्याओं का अध्ययन कर मौलिक चिंतन को प्रस्तुत किया गया है। शोध विषय को साहित्य, संस्कृति अथवा मानव जीवन के बृहत संदर्भ में गहनता से जोड़ने का प्रयत्न किया है।

उनके काव्य का मूल उद्देष्य समाज सुधार है। उन्होंने तत्कालीन वर्ण–व्यवथा एवं जाति–व्यवस्था, कर्मकाण्ड, रुढ़ि–परंपरा, अंधविश्वास, बाह्य आड़म्बर आदि का विरोध कर मानव को मानवता और राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया है। अतः इस अध्याय के अतंर्गत 'संत' शब्द की व्युत्पत्ति, 'संत' शब्द की परिभाषाएँ, संत साहित्य का विभाजन, संत साहित्य की परंपरा, संत साहित्य की विशेषताएँ आदि बिंदुओं का अध्ययन किया गया है।

'संत' शब्द का प्रयोग : 'संत' शब्द का प्रयोग प्रायः बुध्दिमान, पवित्रात्मा, सज्जन, परोपकारी, एवं सदाचारी व्यक्ति के लिए किया गया है। डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ने 'हिन्दी साहित्य कोश' में 'संत' की परिभाषा दी है – '' 'सन्त' शब्द का प्रयोग साधारणतः किसी भी पवित्रात्मा और सदाचारी पुरुष के लिए किया जाता है और कभी कभी यह 'साधु' एवं 'महात्मा' शब्दों का पर्याय भी समझ लिया जाता है।''

संत साहित्य का विभाजन : हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल में भक्ति की दो धाराएँ – सगुण तथा निर्गुण प्रवाहित हुई। सगुणधारा के अन्तर्गत राम–कृष्ण भक्ति शाखाएँ आती है, निर्गुण के अंतर्गत संत तथा सूफियों का काव्य आता है।

संत साहित्य की परंपरा : संत साहित्य की परंपरा अत्यंत प्राचीन काल से चली आ रही है। संत साहित्य की रचना का आरंभ ईसवी सन् की बारहवीं शताब्दी में ही हो गया होगा। संत साहित्य के प्रारंभिक युग के प्रथम दौ सो वर्षों तक के केवल कुछ ही संतों का पता चलता है, जिनका कुछ–न–कुछ रचनाएँ मिलती हैं। जिनमें संत सधना, वेणी, त्रिलोचन, नामदेव, रामानंद, सेना नाई, कबीर, पीपा, रैदास, कमाल एवं धन्ना भगत जैसे बहुत से संत कवि हुए। संत साहित्य की रचना का मध्ययुग ईसवी सन् की सोलहवीं शताब्दी से लेकर उसकी अठराहवीं के अंत तक

चलता है। बहुत से संत कवियों ने तो अपने पूर्ववर्ती प्रचारकों का केवल अन्धानुकरण मात्र किया और उनकी अधिकांश रचनाएँ कोरी परंपरा निर्वाह का उदाहरण बनकर ही रह गयी।

संत साहित्य की विशेषताएँ : संत साहित्य की विशेषताओं में निर्गुण ईश्वर की उपासना, भजन तथा नामस्मरण, गुरु की महत्ता, रुढ़ीवाद तथा मिथ्या आड़ंबर का विरोध, जॉति–पाति के भेदभाव का विरोध, रहस्यवादी प्रवृत्ती, नारी के प्रति दृष्टिकोण आदि हैं।

अतः संत साहित्य के साथ–साथ महात्मा कबीर और संत रविदास जी के काव्य की अवधारणा को परखा के गया है। इनकी वाणी ईश्वर के सगुण रुप की अपेक्षा निर्गुण निराकार के उपासक हैं। उन्होंने सामाजिक वर्ण–व्यवस्था के प्रति गहरा आक्रोश व्यक्त किया है। इनके काव्य का उद्देश्य सामाजिक और धार्मिक परिवर्तन लाना है। इसलिए उनका काव्य जन–काव्य है। महात्मा कबीर और संत रविदास जी ने समाज–कल्याण का मार्ग अपना कर मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में शोषित और प्रताड़ित की समस्त प्रवृत्तियों, परिस्थितियों तथा भावनाओं का चित्रण किया। इस प्रकार इनका साहित्य अध्यात्मिक अनुभूतियों का लेखा–जोखा मात्र न होकर उसमें तत्कालीन जन–जीवन का प्रतिबिम्ब विद्यमान है। इनकी वाणी द्वारा यह सिध्द होता है कि तत्कालिन मानवी जीवन में नैतिक मूल्यों की स्थापना होकर जीवन जीने के लिए एक नवीन दृष्टि प्राप्त हुई।

प्रस्तुत द्वितीय अध्याय 'हिंदी संत काव्यधारा की परिस्थितियॉ' नामक है। इस अध्याय में महात्मा कबीर और संत रविदास के वाणीयों पर तत्कालीन परिस्थितियों के प्रभाव को रेखांकित किया गया है। साथ ही तत्कालीन समस्याओं को समझने में यह अध्याय सहाय्यक रहा है। इस अध्याय में तत्कालीन और वर्तमान परिस्थितीयों के अंतर को परखा गया है। साथ ही उसके प्रासंगिकता को भी रेखांकित किया गया है।

महात्मा कबीर और संत रविदास के वाणी मानवकल्यान की दृष्टि सामाजिक, धार्मिक विचारों एवं अनुभुतियों का प्रकाशन करती है। इनकी विचारधराओं का, शिक्षाओं का जनसमाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा। दोनों संतों ने तत्कालीन हिंदू तथा मुस्लिम धार्मिक परंपराओं एवं रुढ़िगत मान्यताओं पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया है। अतः इन परिस्थितियों में राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक और आर्थिक आदि परिस्थितियों का अध्ययन किया गया है।

राजनीतिक परिस्थितियाँ : महात्मा कबीर एवं संत रविदास का जन्म ऐसे समय में हुआ जब सारा राष्ट्र राजनीतिक दृष्टि से पतनोन्मुख हो रहा था। भक्तिकालीन युग राजनीतिक दृष्टि

से उलट फेर का युग था। इस भक्तिकाल के राजनीतिक परिस्थितियों से पता चलता है कि भारत पर विदेशी आक्रमण हुए। इन आक्रमणकारियों में – गजनवी, गुलाम वंश, खिलजी वंश, तुगलक वंश, सैय्यद वंश और लोदी वंश आदि है। भक्तिकालीन परिस्थितियों से ज्ञात होता है कि विदेशी आक्रमकों ने देश में अपनी राजनीतिक सत्ता स्थापित करने के साथ–साथ इस्लाम धर्म का भी प्रचार किया। हिंदू समाज राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक सभी स्तर पर पिस रहा था। ऐसी परिस्थितियों में महात्मा कबीर और संत रविदास जी का जन्म हुआ। जो तत्कालीन परिवेश से प्रभावित होकर जनता को निराकार ब्रह्म, प्रेम, भक्ति, मानवता, समता, बंधुता, स्वातंत्र्यता, एकता, राष्ट्रीयता आदि का उपदेश देकर जनता को जागृत किया।

सामाजिक परिस्थितियाँ : निर्गुण काव्य की प्रेरक परिस्थितियों में तत्कालीन सामाजिक परिवेश का महत्वपूर्व योगदान है। भारतीय समाज दैन्य और हीनावस्था की स्थिति से गुजर रहा था। अनेक प्रकार की बुराईयों के कारण सामाजिक प्रगति का विकास रुका हुआ था।

महात्मा कबीर और संत रविदास युगीन भारतीय समाज की अवस्था शोचनीय थी। समाज के हिंदू–मुसलमान तथा अन्य वर्गों में धार्मिक एवं व्यावहारिक सभी बातों में आड़म्बर बढ़ता जा रहा था। सभी वर्ग असत्य एवं झूठी बातों के चक्कर में पड़े थे।

मध्यकालीन भारतीय समाज में वर्ण–व्यवस्था गुणकर्मानुसार न रहकर कुल–जन्मानुसार हो गयी थी। भक्तिकालीन समाज की स्थिति दयनीय और सोचनीय थी, ऐसी परिस्थितियों में शिक्षा का नितांत अभाव था।

अतः मध्यकालीन भारतीय सामाज में वर्ण–व्यवस्था, बाल–विवाह, विधवा–विवाह, सती–प्रथा, गुलामी–प्रथा, बहु–स्त्री प्रथा, जाति–प्रथा, सांप्रदायिक कट्टरता आदि कुप्रथाएँ चल रही थी। महात्मा कबीर और संत रविदास जी ने इन कुप्रथाओं का विरोध कर नए मूल्यों की स्थापना की है।

धार्मिक परिस्थितियाँ : महात्मा कबीर और संत रविदास जी का धार्मिक वातावरण अत्यंत दूषित था। तत्कालीन समय में अनेक धर्मों का प्रचलन था। भारतीय समाज धार्मिक चेतना की संघर्षमय परिस्थितियों से गुजर रहा था। तत्कालीन प्रमुख धर्मों में हिंदू धर्म, वैष्णव धर्म, शाक्त धर्म, बौध्द धर्म, जैन धर्म, इस्लाम धर्म आदि हैं।

महात्मा कबीर और संत रविदास जी के समय भारत एक ऐसी विचित्र परिस्थिती से गुजर रहा था। जिसमें धर्म, व्यक्ति और समाज की प्रत्येक गतिविधियों को नियंत्रित करता था। ऐसी

स्थिति में धर्म के ठेकेदारों, पंडे, पुरोहित और मुल्लाओं का निरंकुश हो जाना स्वाभाविक था। जिसके परिणाम स्वरूप धर्म में विभिन्न विकृतियाँ उत्पन्न हो गई।

मध्यकालीन धार्मिक परिस्थिति अत्यंत दुःखद और अत्याचारपूर्ण थी। प्रमुखता से मध्यकालीन समाज में प्रमुख दो धर्मों का प्रचलन था हिंदू और मुस्लिम। एक ओर तत्कालीन मुस्लिम शासकों द्वारा राज्यलिप्सा के कारण हिंदुओं पर अन्याय एवं अत्याचार ढाए गए। तो दूसरी ओर हिंदू धर्म के भीतर जाति–पाँति का भेद–भाव, मूर्तिपूजा, बाह्याड़म्बर, अंध–विश्वास आदि कुप्रथाएँ दिखाई देती है। इन्हीं अन्याय, अत्याचार, कुप्रथाओं का विरोध सभी दोनों संतों ने डटकर किया है।

आर्थिक परिस्थितियाँ : महात्मा कबीर और संत रविदास जी के समय की आर्थिक परिस्थिति अच्छी थी। भक्तिकालीन राजनीतिक परिस्थितियों से ज्ञात होता है कि राजनीतिक दशा अत्यंत दयनीय और सोचनीय थी। विदेशी आक्रमणकारों, निरंतर युध्दों एवं राजनीतिक परिस्थितियों की अस्थिरता के कारण देश की आर्थिक संपन्नता को बड़ा धक्का पहुँचा। आर्थिक दृष्टि से समाज दो वर्गों में विभक्त था। एक वर्ग सामन्तों, सरदारों एवं दरबार से संबंधित अन्य व्यक्तियों एवं बड़े–बड़े व्यापारियों का था, जो वैभव एवं विलासितापूर्ण संपन्न जीवन जी रहा था। तो दुसरा वर्ग किसान, मजदूरों एवं उच्च वर्ग की सेवा में नियुक्त व्यक्तियों का था, जो अपेक्षाकृत, अभावग्रस्त सामान्य जीवन व्यतीत कर रहा था।

तत्कालीन समाज में जहाँ एक ओर तलवार की नोक पर ऐश्वर्य एवं समृध्दि के स्वछंद खेल खेले जा रहे थे, वहीं दूसरी ओर आर्थिक विषमता के कारण मनुष्य–मनुष्य का भक्षण करने को तत्पर हो रहा था।

साहित्यिक परिस्थितियाँ : किसी भी काल की तत्कालीन परिस्थितियों का दर्शन साहित्य के माध्यम से होता है। राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, पारिवारिक आदि परिवेशों को लेकर उस समय का साहित्यकार एवं रचनाकार साहित्य लिखता है। तत्कालीन संत कवियों का प्रेरणास्त्रोत उनका आत्मानुभव ही है। महात्मा कबीर और संत रविदास जी युगीन समाज विविध संघर्षों में बिखर गया था।

महात्मा कबीर और संत रविदास जी के तत्कालीन समाज में साहित्य–सृजन संस्कृत आचार्यों तक सीमित था। जो उच्च एवं पढ़े–लिखे वर्ग के लिए था। निम्न वर्ग को विद्या–ग्रहण

करने का अधिकार नहीं था। तब उसके लिए साहित्य सृजन बहुत दूर की बात थी। फिर भी नाथ एवं सिध्दों द्वारा अपभ्रंश में साहित्य सृजन हो रहा था, जो जन–साधारण के लिए था।

तृतीय अध्याय के अंतर्गत महात्मा कबीर और संत रविदास जी के जीवनवृत पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही उनके कृतियों का एवं वाणियों का अध्ययन किया गया है। अतः इनके जीवनवृत को समझने के लिए अंत–साक्ष्य, बहिर्साक्ष्य तथा अनुमान का आश्रय लिया गया है। जिससे उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को समझने में सहायक हुआ है। उनके जीवनवृत में जन्म, जन्म–स्थान, जाति, माता–पिता, पुत्र, शिक्षा, रचनाएँ, गुरु, शिष्य, निर्वाण, व्यक्तित्व संबंधी जानकारी प्राप्त हुई है। उनके व्यक्तित्व के पहलुओं में संत, भक्त, समाजसुधारक के रुप दिखाई देते हैं।

महात्मा कबीर का जीवनवृत :

महात्मा कबीर के जन्म और मृत्यु, वास–स्थान, वंश आदि के बारे में विद्वानों में मतभेद रहा है। मध्यकालीन संतों और भक्तों के समान इनका जीवन भी अन्धकारमय है। 'कबीर चरित्र बोध' में 1455 वि. जेष्ठ सुदी पूर्णिमा *सोमवार* को कबीर की जन्म–तिथि स्वीकार की गई।

संत कबीरदास बरम संतोषी, उदार, स्वतंत्रचेता, निर्भीक, सत्यवादी, अहिंसा, सत्य और प्रेम के समर्थक, सात्विक, प्रकृति, बाह्य आड़म्बर विरोधी तथा क्रांतिकारी समाज सुधारक थे। वे मस्तमौला, लापरवाह एक फक्कड़ फकीर थे। वे जन्मजात विद्रोही थे और उनमें एक अदम्य साहस एवं अखंड आत्मविश्वास था। वे प्रखर प्रतिभा तथा विलक्षण अथक सशक्त व्यक्तित्व से संपन्न थे।

कबीरदास जी के रचनाओं में साखी, सबद, रमैनी, बीजक हैं। इन कृतियों को लेकर विद्वानो में मतभेद हैं, फिर भी 'बीजक' उनकी प्रामाणिक रचना मानी गयी है 'बीजक' के तीन भाग है – साखी, सबद, रमैनी। उनकी 'कबीर ग्रंथावली' एक संकलित काव्य ग्रंथ है। 'गुरु ग्रंथ साहब' में इनके 243 दोहे हैं।

संत रविदास का जीवनवृत :

संत रविदास जी के जीवन को पूर्णतः प्रकाश में लाने के लिए दो ही प्रमुख साधन है अंतःसाक्ष्य और बाह्य साक्ष्य। बाह्य साक्ष्य की अपेक्षा अंतःसाक्ष्य महत्वपूर्ण होता है और बाह्य साक्ष्य में सम–सामायिक सामग्री अधिक प्रामाणिक एवं महत्वपूर्ण मानी जाती है।

संत रविदास जी का जन्म विक्रमी संवत् 1433 (सन् 1376 ई.) में माघ शुक्ल पूर्णिमा तिथि रविवार को हुआ था।

संत रविदास जी के व्यक्तित्व के तत्कालीन परिस्थितियों से ज्ञात होता है कि वे आरंभ में एक आदर्श समाज सुधारक थे। तत्पश्चात् कवि, संत, भक्त, उपदेशक आदि रूपों में व्यक्तित्व की स्पष्टता दिखाई देती है। अतः संतों के सभी गुण संत रविदास जी के व्यक्तित्व में दिखाई देते हैं। संत रविदास जी के व्यक्तित्व के बारे में कबीरदास जी कहते है – 'संतन में रविदास संत' हैं।

संत रविदास जी एक महान क्रांतिकारी एवं समाजसुधारक थे। आपने धार्मिक क्षेत्र में महान योगदान दिया, वहाँ सामाजिक क्षेत्र में भी योगदान कम नहीं है। उन्होंने समाज के भीतर फैली जाति–पाँति भेदभाव, सामाजिक विशमता, अस्पृष्यता, रूढ़ी–परंपरा का, बाह्य आडम्बर आदि का घोर विरोध किया है। तत्पश्चात् हिंदू–मुस्लिम एकता, राष्ट्रीय ऐक्य का संदेश दिया है।

चतुर्थ अध्याय में महात्मा कबीर और संत रविदास जी के काव्य में चित्रित राष्ट्रीय एकता और विद्रोह के स्वरों का अध्ययन किया गया है। इस अध्याय में दोनों भक्तिकालीन कवियों के काव्य में व्यक्त मौलिक चिंतन को रेखांकित किया गया है। यह अध्याय शोध कार्य का मूल विषय है। इसके अंतर्गत तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं राष्ट्रीय एकता के कर्तव्य बोध को दर्शाता है। इसी नैतिकता द्वारा मानव जीवन के सुधार का अध्ययन करना है।

साथ ही इस अध्याय में महात्मा कबीर और संत रविदास जी के काव्य में चित्रित राष्ट्रीय एकता और विद्रोह के स्वरों का अध्ययन किया गया है। उनके के काव्य में चित्रित विद्रोह को सामाजिक, धार्मिक आदि वर्गों के अंतर्गत विभाजित कर परखा गया है। उन्होंने सामाजिक परिवर्तनों के मूल में साहित्यकार की भूमिका का भी आकलन करने का प्रयास किया है। उनका मुख्य विद्रोह सामाजिक व्यवस्था के प्रति था।

यहॉ पर महात्मा कबीर और संत रविदास जी के काव्य में चित्रित दो बिंदुओं पर राष्ट्रीय एकता और विद्रोह पर चिंतन किया गया है, जो इस शोध कार्य का मूल उद्देश्य रहा है। राष्ट्रीय एकता ही वह भावना है जो विभिन्न धर्मों, संप्रदायों, जाति, वेशभूषा, सभ्यता एवं संस्कृति के लोगों को एक सूत्र में पिरोए रखती है।

इस अध्याय के अंतर्गत राष्ट्रीय एकता, विद्रोह की अवधारणा, सामाजिक विद्रोह, महात्मा कबीर का विद्रोह और राष्ट्रीय एकता का संदेश, संत रविदास का विद्रोह और राष्ट्रीय एकता का संदेश आदि बिंदुओं का अध्ययन किया गया है।

राष्ट्रीय एकता का अर्थ है – अनेक राष्ट्र की एकता, महत्ता और उन्नति आदि से संबंध रखना ही राष्ट्रीयता है। अपने देश के प्रति उत्कट प्रेम होना ही राष्ट्रीयता है।

'विद्रोह' का तात्पर्य है तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिवर्तन। महात्मा कबीर और संत रविदास जी का मुख्य स्वर विद्रोह का था। उन्होंने वर्णाश्रम व्यवस्था पर तीव्र पहार कर के मनुष्य की मानवता की एवं राष्ट्रीय एकता के महत्व को प्रदान करती है।

महात्मा कबीर के वाणी में विद्रोह का स्वर दिखाई देता है। महात्मा कबीर कालीन परिस्थिती सांप्रदायिकता, जातिवाद, धर्मांध विश्वास, रुढ़ि–परंपरा एवं कुप्रथाएँ प्रचलित थीं। इन प्रथाओं में वर्ण–व्यवस्था का विरोध, बाह्य आड़म्बर तथा सामाजिक रुढ़ियों का विरोध, अवतारवाद तथा बहुदेववाद का विरोध, मूर्ति–पूजा का विरोध, वेशभूषा एवं छापा–तिलक का विरोध, तीर्थ–यात्रा का विरोध, हिन्दू–मुस्लिम सांप्रदायिकता का विरोध, अन्धश्रध्दा का विरोध, वेद, शास्त्र–पुराणों का विरोध, हिंसा का विरोध, असत्य आचारण का विरोध, छुआ–छूत का विरोध, साम्प्रदायिक कट्टरता का विरोध दिखाई देता है।

संत रविदास जी के काव्य में चित्रित राष्ट्रीय एकता और विद्रोह के स्वरों का अध्ययन किया गया है। उनके के काव्य में चित्रित विद्रोह को सामाजिक, धार्मिक आदि वर्गों के अंतर्गत विभाजित कर परखा गया है। संत रविदास कालीन परिस्थिती से ज्ञात होता है कि सांप्रदायिकता, जातिवाद, धर्मांध विशास, रुढ़ि–परंपरा एवं कुप्रथाएँ प्रचलित थीं। इन प्रथाओं में वर्ण–व्यवस्था का विरोध, बाह्य आड़म्बर तथा सामाजिक रुढ़ियों का विरोध, अवतारवाद तथा बहुदेववाद का विरोध, मूर्ति–पूजा का विरोध, वेशभूषा एवं छापा–तिलक का विरोध, तीर्थ–यात्रा का विरोध, हिन्दू–मुस्लिम सांप्रदायिकता का विरोध, अन्धश्रध्दा का विरोध, वेद, शास्त्र–पुराणों का विरोध, हिंसा का विरोध, असत्य आचारण का विरोध, छुआ–छूत का विरोध, साम्प्रदायिक कट्टरता का विरोध दिखाई देता है।

अतः महात्मा कबीर और संत रविदास के वाणी में विद्रोह का स्वर दिखाई देता है। उन विद्रोहों में सांप्रदायिकता, जातिवाद, धर्मांध विशास, रुढ़ि–परंपरा एवं कुप्रथाएँ प्रचलित थीं। इन प्रथाओं में वर्ण–व्यवस्था का विरोध, बाह्य आड़म्बर तथा सामाजिक रुढ़ियों का विरोध, अवतारवाद

तथा बहुदेववाद का विरोध, मूर्ति–पूजा का विरोध, वेशभूषा एवं छापा–तिलक का विरोध, तीर्थ–यात्रा का विरोध, हिन्दू–मुस्लिम सांप्रदायिकता का विरोध, अन्धश्रध्दा का विरोध, वेद, शास्त्र–पुराणों का विरोध, हिंसा का विरोध, असत्य आचारण का विरोध, छुआ–छूत का विरोध, साम्प्रदायिक कट्टरता का विरोध किया है। साथ ही एकता का संदेश देते हुए कहा है कि सभी मानव जाति एक है। अतः एकता, बंधुता, समता, विश्वबंधुत्व का संदेश दिया है।

पंचम अध्याय में महात्मा कबीर और संत रविदास जी के दार्शनिक विचारधारा और मानवता का अध्ययन किया गया है। दर्शनशास्त्र बहुत व्यापक एवं गंभीर विषय है। आत्मा या गुरुजनों के सहायता से ही दर्शनों के चरम लक्ष्य का दर्शन या ज्ञान हो सकता है। जिस प्रकार 'जीवन' को समझने के लिए उसके सभी अंगों का व्यष्टि, समष्टि और समन्वय रुप में ज्ञान प्राप्त करना होता है, उसी प्रकार भारतीय दर्शनों को व्यष्टि, समष्टि और समन्वय रुप में समझना नितान्त आवश्यक है।

भारतीय दर्शन के स्वरुप को देखने से लगता है कि भारतीयों का प्रत्येक कार्य अलौकिक तथा अध्यात्मिक भावनाओं से परिपूर्ण है। भारतवर्ष की पुण्य भूमि में अनादि काल से आध्यात्मिक चिंतन की, दर्शन की विचारधारा बहती चली आ रही है। मानव जीवन पर आध्यात्मिकता का प्रभाव दिखाई देता है।

दर्शन का मुख्य लक्ष्य है मानव का जीवन दुःखमय है। वह कौन–सा कारण है, जो मनुष्य को किसी वस्तु को देखने के लिए प्रेरित करता है ? सर्वप्रथम कहा गया है कि जीव सुख और दुःख के भोग करने के लिए इस संसार में आता है। दर्शन के वर्गीकरण के संबंध में विद्वानों में मतभेद दिखाई देता है। प्रश्न यह है कि इस वर्गीकरण में कितने और कौन–कौन से 'दर्शन' बने ? इस संबंध में पौराणिक कोश में दर्शनों के छः नाम दिए गए हैं। जिसे 'षड्दर्शन' भी कहा जाता है। यह संख्या में छः कहे गए है, जिनमें मोक्ष प्राप्त करना तथा ईश्वर में लीन हो जाना ही जीवन का अंतिम लक्ष्य बतलाया गया है। जैसे – न्याय, सांख्य, योग, पूर्वमीमांसा, उत्तरमीमांसा आदि हैं।

महात्मा कबीर जी के दार्शनिक विचारधाराओं के बिंदुओं पर प्रकाश डाला गया है। महात्मा कबीर मध्यकालीन भारत के महान दार्शनिक थे। उनके वाणी में निर्गुण ब्रह्म की अवधारणा, जीव एवं आत्म दर्शन, माया दर्शन, सांसारिक दर्शन, इष्ट देव का स्वरुप तथा निर्गुण राम की महिमा, एकेश्वरवाद आदि दार्शनिक विचारधाराओं के बिंदु महत्वपूर्ण हैं। कबीर अन्य संतों, भक्तों, साधकों

से भिन्न कोटि के हैं। तथा उन्होंने अपने अनुभव ज्ञान, अध्यात्मिक अनुभूति, उनका समाज दर्शन और आदर्श दर्शन ही काव्य प्रयोजन का उद्देश्य रहा है। अतः कबीर एक अनुभव सिध्द महापुरुष थे, जिन्होंने संत होकर इस भौतिक जीवन की व्यावहारिकता को बड़ी गहराई से देखा–परखा, जाना–जांचा और तब अपने अनुभव के आधार पर जनसमाज को प्रबोधित किया। उनके प्रबोधनों के महत्वपूर्ण बिंदुओं का अध्ययन किया गया है।

संत रविदास जी दार्शनिक हैं। उनके दर्शन में मानव जीवन की महत्ता को विशद किया है। संसार में दार्शनिक विचारधारा का महत्त्व अनन्य साधरण है। इस दार्शनिक विचारधारा से सारा विश्व ब्रह्ममय है। जीव उसी ईश्वर का अंश है। अद्वैतवादी दर्शन में जीव ईश्वर का वह अंश है, जो माया से आवृत है। जीव ईश्वर से उत्पन्न हुआ है और ईश्वर में लीन होने के लिए कर्म आवश्यक है। साथ ही मानव की मुक्ति उसके कर्मों पर आधारित है। अतः उनकी विचारधाराओं में ब्रह्म, जगत, जीव और उसके साध्य के प्रति उनकी मान्यताओं के बिंदुओं पर प्रकाश डाला जा रहा है। संत रविदास जी ने भक्त उध्दारक भगवान का अनुभव किया है। उनके गुणों का कथन बड़े–बड़े योगी भी नहीं कर सके। संत रविदास जी ने ईश्वर को मुक्ति का दाता माना है।

CONTRIBUTION TO THE SOCIETTY

प्रस्तुत लघु शोध परियोजना के द्वारा समाज में राष्ट्रीस एकता, सर्व धर्म समभाव, सामाजिक एकता, धार्मिक एकता, मानवता, समानता, बंधुता, समता, विश्वबंधुत्व आदि के प्रस्फुटन होने में मदत हो सकती है। महात्मा कबीर जी और संत रविदास जी का तत्कालीन सामाज दैन्य और हीनावस्था की स्थिति से गुजर रहा था। अनेक प्रकार की बुराईयों के कारण सामाजिक प्रगति का विकास रुका हुआ था। जिनमें वर्ण–व्यवथा एवं जाति–व्यवस्था, कर्मकाण्ड, रुढ़ि–परंपरा, अंधविश्वास, बाह्य आड़म्बर आदि प्रमुख समाज इन बुराईयों से ग्रस्त था। ऐसे समय में महात्मा कबीर जी और संत रविदास जी ने तत्कालीन समाजिक बुराईयों का विरोध कर समाज को एकता का संदेश देते हुए कहा है कि सभी मानव जाति एक है। आज हमारा देश धर्म और जातियॉ में विभक्त है। ऐसे परिस्थितीयों में मानवता ही ऐसा धर्म है, जो राष्ट्र को

एकता के सुत्र में बांधता है या पिरोता है। अतः उनका एकता, बंधुता, समता, विश्वबंधुत्व का संदेश मानव कल्यान एवं राष्ट्र उध्दार के लिए महत्वपुर्ण रहा है।